विश्वकर्मा चालीसा
(Vishwakarma Chalisa)

॥विश्वकर्मा चालीसा॥

॥ दोहा ॥

श्री विश्वकर्म प्रभु वन्दऊं,
चरणकमल धरिध्यान ।
श्री, शुभ, बल अरु शिल्पगुण,
दीजै दया निधान ॥

॥ चौपाई ॥

जय श्री विश्वकर्म भगवाना ।
जय विश्वेश्वर कृपा निधाना ॥

शिल्पाचार्य परम उपकारी ।
भुवना-पुत्र नाम छविकारी ॥

अष्टमबसु प्रभास-सुत नागर ।
शिल्पज्ञान जग कियउ उजागर ॥

अद्भुत सकल सृष्टि के कर्ता ।
सत्य ज्ञान श्रुति जग हित धर्ता **॥ ४ ॥**

अतुल तेज तुम्हतो जग माहीं ।
कोई विश्व मंह जानत नाही ॥

विश्व सृष्टि-कर्ता विश्वेशा ।
अद्‌भुत वरण विराज सुवेशा ॥

एकानन पंचानन राजे ।
द्विभुज चतुर्भुज दशभुज साजे ॥

चक्र सुदर्शन धारण कीन्हे ।
वारि कमण्डल वर कर लीन्हे **॥ ८ ॥**

शिल्पशास्त्र अरु शंख अनूपा ।
सोहत सूत्र माप अनुरूपा ॥

धनुष बाण अरु त्रिशूल सोहे ।
नौवें हाथ कमल मन मोहे ॥

दसवां हस्त बरद जग हेतु ।
अति भव सिंधु मांहि वर सेतु ॥

सूरज तेज हरण तुम कियऊ ।
अस्त्र शस्त्र जिससे निरमयऊ **॥ १२ ॥**

चक्र शक्ति अरू त्रिशूल एका ।
दण्ड पालकी शस्त्र अनेका ॥

विष्णुहिं चक्र शूल शंकरहीं ।
अजहिं शक्ति दण्ड यमराजहीं ॥

इंद्रहिं वज्र व वरूणहिं पाशा ।
तुम सबकी पूरण की आशा ॥

भांति-भांति के अस्त्र रचाए ।
सतपथ को प्रभु सदा बचाए **॥ १६ ॥**

अमृत घट के तुम निर्माता ।
साधु संत भक्तन सुर त्राता ॥

लौह काष्ट ताम्र पाषाणा ।
स्वर्ण शिल्प के परम सजाना ॥

विद्युत अग्नि पवन भू वारी ।
इनसे अद्भुत काज सवारी ॥

खान-पान हित भाजन नाना ।
भवन विभिषत विविध विधाना **॥ २० ॥**

विविध व्सत हित यत्रं अपारा ।
विरचेहु तुम समस्त संसारा ॥

द्रव्य सुगंधित सुमन अनेका ।
विविध महा औषधि सविवेका ॥

शंभु विरंचि विष्णु सुरपाला ।
वरुण कुबेर अग्नि यमकाला ॥

तुम्हरे ढिग सब मिलकर गयऊ ।
करि प्रमाण पुनि अस्तुति ठयऊ **॥ २४ ॥**

भे आतुर प्रभु लखि सुर-शोका ।
कियउ काज सब भये अशोका ॥

अद्‌भुत रचे यान मनहारी ।
जल-थल-गगन मांहि-समचारी ॥

शिव अरु विश्वकर्म प्रभु मांही ।
विज्ञान कह अंतर नाही ॥

बरनै कौन स्वरूप तुम्हारा ।
सकल सृष्टि है तव विस्तारा **॥ २८ ॥**

रचेत विश्व हित त्रिविध शरीरा ।
तुम बिन हरै कौन भव हारी ॥

मंगल-मूल भगत भय हारी ।
शोक रहित त्रैलोक विहारी ॥

चारो युग परताप तुम्हारा ।
अहै प्रसिद्ध विश्व उजियारा ॥

ऋद्धि सिद्धि के तुम वर दाता ।
वर विज्ञान वेद के ज्ञाता **॥ ३२ ॥**

मनु मय त्वष्टा शिल्पी तक्षा ।
सबकी नित करतें हैं रक्षा ॥

पंच पुत्र नित जग हित धर्मा ।
हवै निष्काम करै निज कर्मा ॥

प्रभु तुम सम कृपाल नहिं कोई ।
विपदा हरै जगत मंह जोई ॥

जै जै जै भौवन विश्वकर्मा ।
करहु कृपा गुरुदेव सुधर्मा ॥ **३६ ॥**

इक सौ आठ जाप कर जोई ।
छीजै विपत्ति महासुख होई ॥

पढाहि जो विश्वकर्म-चालीसा ।
होय सिद्ध साक्षी गौरीशा ॥

विश्व विश्वकर्मा प्रभु मेरे ।
हो प्रसन्न हम बालक तेरे ॥

मैं हूं सदा उमापति चेरा ।
सदा करो प्रभु मन मंह डेरा **॥ ४० ॥**

॥ दोहा ॥
करहु कृपा शंकर सरिस,
विश्वकर्मा शिवरूप ।
श्री शुभदा रचना सहित,
हृदय बसहु सूर भूप ॥

****

Vishwakarma Chalisa

॥ doha ॥

shree vishvakarm prabhu vandan,
charanakamal hrdayadhyaan ॥
shree, shubh, bal aru shilpagun,
deejai daya nidhaan ॥

॥ chaupaee ॥

jay shree vishvakarm bhagavaana ॥
jay vishveshvar krpa nidhaan ॥

shilpaachaary param upakaaree ॥
bhuvana-putr naamakaran chhavi ॥

ashtamabasu prabhaas-sut naaga ॥
shilpagyaan jag kiyau sampark ॥

adbhut sakal srshti ke karta ॥
saty gyaan shruti jag hit dharata **॥ 4 ॥**

atul tej tumhato jag maaheen ॥
koee vishv manh jaanat nahin ॥

vishv rachana-karta vishvesha ॥
adbhut varan viraj suvesha ॥

ekaanan panchaanan raaje ॥
dvibhuj chaturbhuj dashabhuj saaje ॥

chakr sudarshan dhaaran keenhe ॥
vaari kamandal var kar leenhe **॥ 8 ॥**

shilpashaastr aru shankh anoopa ॥
sohat sootr sootr ॥

dhanuraashi baan aru trishool sohe ॥
nauven haath kamal man mohe ॥

dasavaan hast barad jag thai ॥
ati bhav sindhu maanhi var setu ॥

sooraj tej haran tum kiyau ॥
astr shastr nirmit nirmayau **॥ 12 ॥**

chakr shakti aroo trishool eka ॥
dand paalakee shastr aneka ॥

vishnuhin chakr shul shankarahin ॥
ajahin shakti dand yamaraajahin ॥

indrahin vajr va varunahin paasha ॥
sanstha tum pooran kee aasha ॥

parivaar-bhakti ke astr rachae ॥
satapath ko prabhu sada bachae **॥ 16 ॥**

amrt ghaat ke tum nirmaata ॥
saadhu sant bhaktan sur traata ॥

loh kaasht taamr paashaan: ॥
svarn shilp ke param alankaran ॥

vidyut agni pavan bhoo vaaree ॥
jeens adbhut kaaj savaaree ॥

khaan-paan hit bhajan naana ॥
bhavan vividh vibhakti **॥ 20 ॥**

vividh vasat hit yaatraan apaara ॥
virachehu tum sab sansaara ॥

dravy rasaayan suman anya ॥
vividh mahaaushadhi saviveka ॥

shambhu viranchi vishnu surapaala ॥
varun kuber agni yamakaala ॥

tumhare dhig sab milakar gayau ॥
kari pramaan puni astuti thayau **॥ 24 ॥**

bhe aatur prabhu lakhi sur-shoka ॥
kiyau kaaj sab bhaye ashoka ॥

adbhut raache yaan manahaaree ॥
jal-thal-gagan maanhi-samaachaaree ॥

shiv aru vishvakarm prabhu maanhee ॥
kah vigyaan antar nahin ॥

baranai kaun svaroop lipi ॥
sakal srshti tav vistaara **॥ 28 ॥**

rachet vishv hit trividh shareera ॥
tum bin harai kaun bhav haaree ॥

mangal- mool bhaagy bhay haaree ॥
shok anupayogeetrailok vihaaree ॥

chaaro yug prataapee gareeb ॥
ahai prasiddh vishv ujiyaara ॥

rddhi siddhi ke tum var daata ॥
var vigyaan ved ke gyaata **॥ 32 ॥**

manu may tvashta shilpee taksha ॥
bhagavaan nit karate hain raksha ॥

panch putr nit jag hit dharma ॥
havai nishkaam karai nij karm ॥

prabhu tum sam krpaal nahin koee ॥
vipada harai jagat manh joee ॥

jay jay jay bhavan nirmaanakarta ॥
karahu krpa gurudev suraamama **॥ 36 ॥**

ik sau aath jap kar joee ॥
chhinai vipatti mahaasukh hoi ॥

padhaahi jo vishvakarm-chaaleesa ॥
hoy siddh saakshee gaureesha ॥

vishv vaastushilp prabhu mere ॥
ho manoranjak ham baalak tere ॥

main hoon sada umaapati chera ॥
sada karo prabhu man manh ॥ 40 ॥

॥ doha ॥

karahu krpa shankar saris,
shivaroop ॥
shree shubhada rachana sahit,
hari basahu soor bhoop ॥

****